

Padma Shri



PROF. (MS.) BADAPLIN WAR

Prof. (Ms.) Badaplin War is a Professor in the Department of Khasi, North-Eastern Hill University, a Central University located in Shillong, the capital of the scenic state of Meghalaya.

2. Born on the 20th December, 1957 in Shillong, Prof. (Ms.) War received her M.A. degree in English from the North-Eastern Hill University, M.A. and M.Phil degree in Linguistics from the University of Delhi and PhD degree in Linguistics from the University of London. She joined the Department of Khasi, North-Eastern Hill University in 1983, just two years after the Department's inception.

3. Prof. (Ms.) War is an expert on Khasi Linguistics, Literature, Culture and Translation. She initiated and taught Linguistic Anthropology in the Department of Anthropology, NEHU. She also taught in the Department of Linguistics when it was first started in the University. She taught Transformational Grammar and Language Policy in India in the erstwhile Central Institute of English and Foreign Languages, Shillong Regional Centre. Her administrative responsibilities in the North-Eastern Hill University include her holding the office of the Head, Department of Khasi for three terms, Dean, School of Humanities, Chairperson of Women's Cell and the Presiding Officer of the Internal Complaints Committee.

4. Prof. (Ms.) War has published numerous books, book chapters and research papers and has successfully guided 40 MPhil and PhD research scholars working on different aspects of culture, language and literature. She has made presentations as a Resource Person on the various aspects of Khasi Literature and Language and its dialects, on the unique matrilineal social system of the Khasis at International, National and Regional Conferences. Seminars etc. A keen educationist, she took active part in building up local schools as the President of the Managing Committees of a Lower Primary School and of a Secondary School.

5. Prof. (Ms.) War is the Founder President of the Society for Khasi Studies, The Tribal Literary Forum of India and the Shillong Academic Society. She has contributed as Language Contributor in the People's Linguistic Survey of India published by Bhasha, Baroda; as Co-Coordinator and Resource Person on workshops etc. organized by Sahitya Akademi; as Chairperson of the Reviewing Committee for awarding financial assistance to Khasi Authors, Government of Meghalaya; as Member of the Main Committee for inclusion of the Khasi Language in the 8th Schedule of the Constitution of India; as Member of the Executive Board/ Governing Body of the North East Zone Cultural Committee, Ministry of Culture, Government of India; as Coordinator of the Committee on Preservation and Promotion of Endangered Languages in the University and as Member of the Advisory Committee for the State Literary Award, Government of Meghalaya. She was also the Adviser of the local Women's Welfare Society.

6. Prof. (Ms.) War is a member of The Linguistic Association of Great Britain and of The Transactions of Philological Society, United Kingdom. She has held the position of Chairperson of the Syllabus Committee on Khasi Papers for the Meghalaya Civil Services Examinations. She is presently the Treasurer of the Khasi Authors' Society (the Sahitya Sabha of other states in the country). She has been awarded the Rastriya Lok Bhasha Samman — 2003 by Gandhi Hindusthani Sahitya Sabha, New Delhi.

पद्म श्री



प्रो. (सुश्री) बडापलीन वार

प्रो. (सुश्री) बडापलीन वार, खूबसूरत मेघालय राज्य की राजधानी, शिलांग में स्थित एक केंद्रीय विश्वविद्यालय, खासी विभाग, पूर्वोत्तर-हिल विश्वविद्यालय में प्रोफेसर हैं।

2. 20 दिसंबर, 1957 को शिलांग में जन्मी, प्रो. (सुश्री) वार ने नॉर्थ-ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी से अंग्रेजी में एमए की डिग्री, दिल्ली विश्वविद्यालय से भाषाविज्ञान में एमए और एम.फिल की डिग्री और लंदन विश्वविद्यालय से भाषाविज्ञान में पीएचडी की डिग्री प्राप्त की। विभाग की स्थापना के ठीक दो साल बाद, उन्होंने 1983 में पूर्वोत्तर पहाड़ी विश्वविद्यालय के खासी विभाग में ज्वाइन कर लिया।

3. प्रो. (सुश्री) वार, खासी भाषाविज्ञान, साहित्य, संस्कृति और अनुवाद की विशेषज्ञ हैं। उन्होंने मानव विज्ञान विभाग, एनईएचयू में भाषाई नृविज्ञान की शुरुआत की और उसे पढ़ाया। उन्होंने भाषाविज्ञान विभाग में भी उस समय पढ़ाया जब वह विश्वविद्यालय में पहली बार शुरू हुआ था। उन्होंने भारत में, पूर्व केंद्रीय अंग्रेजी और विदेशी भाषा संस्थान, शिलांग, क्षेत्रीय केंद्र में, परिवर्तनकारी व्याकरण और भाषा नीति को भी पढ़ाया। नॉर्थ-ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी में उन्होंने अनेक जिम्मेदारियां निभाईं।

4. प्रो. (सुश्री) वार ने कई पुस्तकें, रिसर्च पेपर और शोध पत्र प्रकाशित किए हैं और संस्कृति, भाषा और साहित्य के विभिन्न पहलुओं पर काम कर रहे 40 एमफिल और पीएचडी शोधार्थियों का सफलतापूर्वक मार्गदर्शन किया है। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय और क्षेत्रीय सम्मेलनों, सेमिनारों आदि में खासी साहित्य और भाषा और उसकी बोलियों के विभिन्न पहलुओं पर खासी की अनूठी मातृवंशीय सामाजिक व्यवस्था पर एक संसाधन व्यक्ति के रूप में प्रस्तुतियां दी हैं। एक सक्रिय शिक्षाविद के रूप में उन्होंने एक छोटे प्राथमिक विद्यालय और एक माध्यमिक विद्यालय की प्रबंध समितियों के अध्यक्ष के रूप में स्थानीय स्कूलों के निर्माण में सक्रिय भाग लिया।

5. प्रो. (सुश्री) वार सोसाइटी फॉर खासी स्टडीज, द ट्राइबल लिटरेरी फोरम ऑफ इंडिया और शिलांग एकेडमिक सोसाइटी की संस्थापक अध्यक्ष हैं। उन्होंने भाषा, बड़ौदा द्वारा प्रकाशित भारतीय जनभाषा सर्वेक्षण में भाषा योगदानकर्ता के रूप में साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित कार्यशालाओं आदि पर समन्वयक और रिसोर्सफुल व्यक्ति के रूप में; खासी लेखकों, मेघालय सरकार को वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए समीक्षा समिति के अध्यक्ष के रूप में; भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में खासी भाषा को शामिल करने के लिए मुख्य समिति के सदस्य के रूप में; पूर्वोत्तर जोन सांस्कृतिक समिति, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के कार्यकारी बोर्ड / शासी निकाय के सदस्य के रूप में; विश्वविद्यालय में लुप्तप्राय भाषाओं के संरक्षण और संवर्धन पर समिति के समन्वयक के रूप में और मेघालय सरकार के राज्य साहित्य पुरस्कार के लिए सलाहकार समिति के सदस्य के रूप में अपना योगदान दिया है। वह स्थानीय महिला कल्याण सोसायटी की सलाहकार भी थीं।

6. प्रो. (सुश्री) वार द लिंग्विस्टिक एसोसिएशन ऑफ ग्रेट ब्रिटेन और द ट्रांजैक्शन ऑफ फिलोलॉजिकल सोसाइटी, यूनाइटेड किंगडम की सदस्य हैं। उन्होंने मेघालय सिविल सेवा परीक्षाओं के लिए खासी पेपर्स के लिए पाठ्यक्रम समिति के अध्यक्ष का पद संभाला है। वह वर्तमान में खासी ऑथर्स सोसाइटी (देश के अन्य राज्यों की साहित्य सभा) की ट्रेजरर हैं। उन्हें गांधी हिंदुस्तानी साहित्य सभा, नई दिल्ली द्वारा राष्ट्रीय लोक भाषा सम्मान – 2003 से सम्मानित किया गया है।